B.A. PART – 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य
भाग-1

प्रश्न :- रीतिकाल का वीरकाव्य के प्रमुख कवि और उनका साहित्य बतायें ?

उत्तर :- रस की दृष्टि से रीति या शृंगार काल में शृंगार के बाद वीर रस का स्थान है। आचार्य शुक्लजी भी स्वीकार कर चुके हैं कि, "वास्तव में शृंगार और वीर इन्हीं दो रसों की कविता इस काल में हुई है।" अब तक हिन्दी-साहित्य के इतिहासों में इस काल के रीति और शृंगार-साहित्य को ही प्रधान मानकर 'वीर-साहित्य' की प्रायः उपेक्षा हुई है। इस उपेक्षा के अनेक कारण हो सकते हैं। इतिहासकारों ने काल के 'नामकरण' पर अधिक बल देकर उसी साहित्य-धारा को उस काल का प्रमुख प्रतिनिधि साहित्य माना है, जिससे वह उस काल का नामकरण करना चाहते हैं। प्रस्तुत काल के नामकरण के साथ रीति और शृंगार दोनों धाराओं को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ तथा 'वीर-साहित्य' को गौण स्थान दिया गया है। इस काल में वीर-साहित्य व्यापक रूप में लिखा गया है, उसका सम्यक् अध्ययन उस मात्रा में नहीं हुआ है। इस ओर संकेत करते हुए डॉ० भगवानदास तिवारी ने लिखा है – "रीतिकालीन हिन्दी वीर काव्य की रचनाएँ कश्मीर से महाराष्ट्र तक और बंगाल से गुजरात, मुंजे, कच्छ, काठियावाड़ तक सारे देश में बिखरी पड़ी हैं। इनका संकलन, अध्ययन, विश्लेषण, वर्गीकरण और मूल्यांकन अत्यन्त श्रमसाध्य, व्ययसाध्य विलक्ष कार्य है, अतः रीतिकालीन हिन्दी-वीर-काव्य का सर्वांगीण अध्ययन आद्यावधि नहीं हो पाया है।" यह दशा केवल वृहत् इतिहास में ही नहीं, प्रायः सभी इतिहासों में पायी जाती है।

रीति या शृंगार-काल का वीर-काव्य आदिकालीन काव्य से कुछ भिन्न है। यद्यपि इस काल में भी इस धारा के विषयों में राजाओं,

नवाबों एवं सामन्तों की झूठी प्रशस्तियाँ लिखी हैं, किन्तु कुछ ऐसे भी कवि हैं जिनकी दृष्टि राष्ट्र के गौरव और उन्नति पर भी थी, जिससे उनका वीर-काव्य विशुद्ध वीर-काव्य कहलाने का अधिकारी है। कुछ देवताओं की वीरता का वर्णन करने वाला काव्य है तो कुछ रासो पद्धति का। शृंगार-मिश्रित वीर-काव्य भी इस काल में लिखा गया। साथ ही 'महाभारत' जैसे वीर-रस प्रधान महाकाव्यों का अनुवाद भी हुआ है। इस काल में विभिन्न शैली और विभिन्न उद्देश्यों से प्रेरित वीर-काव्य की रचना भी हुई है। इस दृष्टि से रीति या शृंगार-काल वीर-साहित्य के द्वितीय उत्थान का काल-खण्ड माना जा सकता है।

वीर काव्य के प्रमुख कवि और उनका साहित्य

1. कवि भूषण —

भूषण वीर-रस के सर्वश्रेष्ठ कवि और वीरों के भूषण कहे जाते हैं। इनके जन्म-काल के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रचलित हैं। इनकी रचनाओं से स्पष्ट है कि ये छत्रपति शिवाजी महाराज के समकालीन थे। शिवाजी का जन्म सन् 1630 और मृत्यु सन 1680 ई० में मानी जाती है। अतः शिवसिंह सेंगर द्वारा दिया गया भूषण का जन्म-काल सन 1681 (सं० 1738) निश्चित रूप में ग्राह्य नहीं माना जा सकता। इसके आधार पर भूषण को शिवाजी के बाद का कवि मानकर उनकी रचनाओं की अवहेलना करना समीचीन नहीं है। वैसे 'सरोज' के संबंध में सप्रमाण संदिग्धता मानी जा चुकी है। ऐसी स्थिति में आचार्य शुक्ल द्वारा प्रस्तुत जन्म-काल सन 1623 (सं० 1680) या मिश्रबन्धु द्वारा प्रस्तुत सन

1625 (सं० 1682) के आस-पास माना जाता है। इनका जन्म कानपुर जिले के तिकवांपुर गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। इनके मूल नाम के संदर्भ में भी पर्याप्त मतभिन्नता दिखाई देती है। विद्वानों ने मनीराम, मुरलीधर, घनश्याम आदि इनके मूल-नाम दिये हैं, जब कि कुछ विद्वानों ने इनका मूल-नाम 'भूषण' सप्रमाण सिद्ध किया है। सम्भव है कि चिंगारकूट के सोलंकी राजा रुद्रशाह के पुत्र हृदयराम ने भूषण को 'कविभूषण' कहकर उनका गौरव बढ़ाया हो। भूषण के आश्रयदाता के रूप में अनेक नाम दिये जाते हैं, किन्तु इनका साहित्य-सृजन छत्रपति शिवाजी महाराज और छत्रसाल के राज्याश्रय में हुआ है। अन्य आश्रयदाता के रूप में हृदयराम सोलंकी, शिवाजी के पौत्र शाहू, शिवाजी के सेनापति चिमणाजी, शिवा-नरेश अवधूतसिंह, जयपुर-नरेश जयसिंह, उनके पुत्र रामसिंह, बूँदी-नरेश राव बुद्धिसिंह आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। वस्तुतः भूषण सच्चे वीरोपासक थे। साथ ही राष्ट्रभक्त और स्वाभिमानी भी थे। अन्य रीतिकालीन कवियों के समान धन-प्राप्ति के लिए चाटुकारी-प्रधान काव्य-रचना करने वाली न तो उनमें प्रवृत्ति थी और न उन्होंने वैसा प्रयास ही किया है। इस प्रकार से अपनी वीरोपासक प्रतिभा के सच्चे प्रेरक-व्यक्तित्व की खोज में अनेक दरबारों में गये, किन्तु अपने अनुरूप आश्रयदाता के रूप में उन्हें छत्रपति शिवाजी और महाराज छत्रसाल ही लगे। यह उस समय का ऐतिहासिक सत्य है कि उस घोर अन्धकार के युग में राष्ट्रीयता, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्वलित करने वाले ये दो व्यक्तित्व ही रहे हैं, उनमें से भी छत्रपति

शिवाजी का व्यक्तित्व अधिक प्रकाशमान है। इसलिए भूषण की वीरोपासक प्रतिभा के आलम्बन वे ही रहे हैं।

"और राव राजा एक मन में न ल्याऊँ अब,
शिवा को सराहूँ कि सराहूँ छत्रसाल को।"

(शेषभाग बचा है।)

पता:-
डॉ० समदर्शी समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U M)
मो० नं० → 7909046087
दिनांक - 15.02.2022